# पतझड़ में टूटी पत्तियाँ

–रवींद्र केलेकर

गद्यांश

प्रस्तुत पाठ में लेखक 'रवींद्र केलेकर' द्वारा रचित दो प्रसंग लिए गए हैं और इन दोनों पर 'गागर में सागर' भरने की बात सार्थक सिद्ध होती है। यह दोनों प्रसंग पढ़ते हुए यह बात याद रखने की जरूरत नहीं है कि 'सार सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय' अर्थात् सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि गद्य रचनाओं के सार को ग्रहण कर लेना चाहिए तथा व्यर्थ को छोड़ देना चाहिए। किन्तु इन दो प्रसंगों में जो कुछ लिखा है उसका एक–एक शब्द समझने और याद रखने योग्य है।

# वस्तुपरक प्रश्न

[ 1 अंक ]

## गद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

*पर बात न भूलें की बखान आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है और जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियलिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझबूझ ही आगे आने लगती है।*

*सोना पीछे रहकर ताँबा ही आगे आता है।*

(क) व्यावहारिकता का बखान होने का अर्थ है—
- (i) व्यक्ति के व्यवहार की प्रशंसा होना
- (ii) व्यक्ति की पहचान उसके व्यवहार से होना
- (iii) व्यक्ति के व्यवहार का मजाक बनना
- (iv) व्यावहारिकता का अर्थ बताना

(ख) प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट के जीवन से क्या खत्म होने लगता है?
- (i) आदर्शवादिता (ii) गंभीरता
- (iii) मनोरंजन (iv) व्यावहारिकता

(ग) प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट की पहचान है कि—
- (i) वह शुद्ध आदर्शवादी होता है
- (ii) वह शुद्ध व्यावहारिक होता है
- (iii) वह आदर्शों को व्यवहार में लाना जानता है
- (iv) वह व्यवहार करना जानता है।

(घ) सोना पीछे रहकर ताँबा आगे आने का अर्थ है—
- (i) आदर्श पीछे रहकर व्यावहारिकता सामने आना
- (ii) व्यावहारिकता पीछे रहकर आदर्शों का सामने आना
- (iii) व्यावहारिकता और आदर्शों का छुप जाना
- (iv) व्यावहारिकता और आदर्शों का सामने आ जाना

(ङ) गद्यांश किस बात के प्रति सचेत कर रहा है?
- (i) हमें प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट नहीं होना चाहिए
- (ii) हमें आदर्शों को व्यवहार में नहीं लाना चाहिए
- (iii) हमें व्यावहारिकता को छोड़ देना चाहिए
- (iv) हमें आदर्शों का स्तर बनाकर रखना चाहिए

उत्तर : (क) *(ii) व्यक्ति की पहचान उसके व्यवहार से होना*

**व्याख्यात्मक हल** : जब हमारे स्वभाव में व्यावहारिकता बढ़ जाती है तो वही हमारी पहचान बन जाती है।

(ख) *(i) आदर्शवादिता*

**व्याख्यात्मक हल** : जब व्यक्ति को लगता है कि व्यावहारिकता से वह सफल हो रहा है, तब उसके आदर्श धीरे-धीरे कम होने लगते हैं।

(ग) *(iii) वह आदर्शों को व्यवहार में लाना जानता है*

(घ) *(i) आदर्श पीछे रहकर व्यावहारिकता सामने आना*

**व्याख्यात्मक हल** : एक आदर्शवादी व्यक्ति जब अपने आदर्शों को व्यवहार में लाना शुरू करता है, तब (सचेत न रहने पर) धीरे-धीरे व्यावहारिकता हावी हो जाती है, आदर्श झुकने लगते हैं।

(ङ) *(iv) हमें आदर्शों का स्तर बनाकर रखना चाहिए*

**व्याख्यात्मक हल** : आदर्शों को व्यवहार में लाते समय इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि आदर्शों का स्तर नीचे न गिरने लगे।

2. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

*चंद लोग कहते हैं गांधीजी 'प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट' थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी कीमत जानते थे। इसलिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। वरना हवा में ही उड़ते रहते। देश उनके पीछे न जाता। हाँ, पर गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं, बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।*

(क) गांधीजी के व्यक्तित्व को कैसा माना जाता है ?
- (i) आदर्शवादी
- (ii) व्यवहारवादी
- (iii) प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट
- (iv) आशावादी

(ख) क्या कारण था कि गांधीजी अपने विलक्षण आदर्शों को व्यवहार में ला सके ?
- (i) वे आदर्शों की कीमत समझते थे
- (ii) वे व्यावहारिकता की कीमत समझते थे
- (iii) वे व्यवहार करना जानते थे
- (iv) वे आदर्श को आवश्यक मानते थे।

(ग) हवा में उड़ते रहने का क्या तात्पर्य है ?
(i) खोखली बातें करना
(ii) हल्के हो जाना
(iii) घमंड होना
(iv) झूठ बोलना

(घ) गांधीजी आदर्शों और व्यावहारिकता का मिलान किस प्रकार करते थे ?
(i) व्यावहारिकता का स्तर ऊँचा उठाकर
(ii) आदर्शों के स्तर को नीचे गिराकर
(iii) आदर्शों को व्यवहार में लाकर
(iv) व्यवहार को आदर्श बना कर

(ङ) गांधीजी ताँबे की कीमत कैसे बढ़ाते थे ?
(i) सोने में ताँबा मिलाकर
(ii) ताँबे में सोना मिलाकर
(iii) ताँबे को व्यवहार में लाकर
(iv) सोने को व्यवहार में लाकर

उत्तर : (क) *(iii) प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट*

**व्याख्यात्मक हल :** उनके उच्च आदर्श थे और उन्हें व्यवहार में लाना भी जानते थे।

(ग) *(i) खोखली बातें करना*

(घ) *(i) व्यावहारिकता का स्तर ऊँचा उठाकर*

**व्याख्यात्मक हल :** आदर्शों को व्यवहार में लाने के लिए उनका स्तर नीचे नहीं गिराते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्श के स्तर पर ऊँचा उठा देते थे।

(ङ) *(ii) ताँबे में सोना मिलाकर*

**व्याख्यात्मक हल :** गांधीजी ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे अर्थात् व्यावहारिकता में आदर्शों को मिलाकर व्यावहारिकता की कीमत को भी बढ़ा दिया करते थे।

**3. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—**

*चाय तैयार हुई। उसने वह प्यालो में भरी। फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए। वहाँ हम तीन मित्र ही थे। इस विधि में शांति मुख्य बात होती है इसलिए वहाँ तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता। प्याले में दो घूट से अधिक चाय नहीं थी। हम ओठों से प्याला लगाकर एक-एक बूँद चाय पीते रहे। करीब डेढ़ घंटे तक चुस्कियों का यह सिलसिला चलता रहा। पहले दस-पंद्रह मिनट मैं उलझन में पड़ा। फिर देखा दिमाग की रफ्तार धीरे-धीरे धीमी पड़ती जा रही है। थोड़ी देर में बिल्कुल बंद भी हो गई। मुझे लगा मानो अनंतकाल में मैं जी रहा हूँ। यहाँ तक कि सन्नाटा भी मुझे सुनाई देने लगा।*

(क) तीन से अधिक आदमियों को कहाँ प्रवेश नहीं दिया जाता था ?
(i) जापान के एक धार्मिक उत्सव में
(ii) जापान की कॉफी पार्टी में
(iii) जापान में ध्यान की एक विशेष परंपरा में
(iv) जापान में लेखक के घर में

(ख) दस-पंद्रह मिनट बाद लेखक ने क्या महसूस किया ?
(i) डेढ़ घंटे से चाय की चुस्कियों का सिलसिला चल रहा है
(ii) दिमाग की रफ्तार धीरे-धीरे कम हो रही है
(iii) वहां केवल तीन ही आदमियों को प्रवेश दिया गया है
(iv) प्यालों में दो घूँट से अधिक चाय नहीं है

(ग) प्रस्तुत गद्यांश में अनंतकाल किसे कहा गया है?
(i) वर्तमान काल को
(ii) भूतकाल को
(iii) भविष्य काल को
(iv) अतीत को

(घ) किस कारण से लेखक उलझन में पड़ गए थे?
(i) सन्नाटे की आवाज सुनकर
(ii) दिमाग की रफ्तार कम देखकर
(iii) अनंत काल को महसूस करके
(iv) डेढ़ घंटे से चलते जा रहे चुस्कियों के सिलसिले को देखकर

(ङ) पाठ और लेखक का नाम है—
(i) झेन की देन— निदा फ़ाज़ली
(ii) बड़े भाई साहब— सीताराम सेकसरिया
(iii) झेन की देन— रवींद्र केलेकर
(iv) सपनों के से दिन— रवींद्र केलेकर

उत्तर : (क) *(iii) जापान में ध्यान की एक विशेष परंपरा में*

**व्याख्यात्मक हल :** यदि ज्यादा लोग होंगे तो शांति बनाए रखना कठिन है और ध्यान की इस प्रक्रिया में शांति मुख्य बात होती है।

(ख) *(ii) दिमाग की रफ्तार धीरे-धीरे कम हो रही है।*

(ग) *(i) वर्तमान काल को*

**व्याख्यात्मक हल :** जब तक हमारा जीवन है वर्तमान काल हमारे साथ है। इसीलिए उसे अनंत काल कहा गया है।

(ङ) झेन की देन— रवींद्र केलेकर

**4. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—**

*अक्सर हम या तो गुजरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्य काल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं, एक चला गया है और दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है वही सत्य है, उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था और वह अनंत के जितना विस्तृत है। जीना किसे कहते हैं उस दिन मालूम हुआ।*

**(क) लेखक ने भूतकाल और भविष्य काल को क्या कहा है ?**
- **(i) एकमात्र सत्य**
- **(ii) अनंत-सा विस्तृत**
- **(iii) रंगीन सपना**
- **(iv) मिथ्या**

**(ख) लेखक ने कैसे जीने की बात कही है ?**
- **(i) रंगीन सपने देखते हुए जीने की**
- **(ii) भूत और भविष्य की कल्पना में जीने की**
- **(iii) वर्तमान में रहकर जीने की**
- **(iv) चाय पीते-पीते जीने की**

**(ग) वर्तमान को सत्य कहा गया है, क्योंकि—**
- **(i) वह अनंत है**
- **(ii) वह बीत चुका है**
- **(iii) वह अभी आया ही नहीं**
- **(iv) वही हमारे हाथ में है**

**(घ) 'चाय पीते-पीते मेरे दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे'—इस कथन का आशय है कि—**
- **(i) लेखक बहुत परेशान थे**
- **(ii) लेखक ने वर्तमान में जीना सीख लिया था**
- **(iii) लेखक चाय की चुस्कियों का आनंद ले रहे थे**
- **(iv) लेखक भूत और भविष्य की कल्पना में मग्न हो गए थे**

**(ङ) लेखक को पहली बार किस बात का पता चला?**
- **(i) वर्तमान काल किसे कहते हैं**
- **(ii) भूतकाल किसे कहते हैं**
- **(iii) जीना किसे कहते हैं**
- **(iv) मरना किसे कहते हैं**

**उत्तर :** (क) *(iv) मिथ्या*

**व्याख्यात्मक हल :** भूतकाल बीत चुका है। भविष्य काल अभी आया नहीं। लेखक के विचार से यह दोनों ही काल मिथ्या अर्थात् झूठ हैं। इन पर हमारा कोई अधिकार नहीं है।

(ख) *(iii) वर्तमान में रहकर जीने की*

(ग) *(iv) वही हमारे हाथ में है।*

**व्याख्यात्मक हल :** जब तक हमारा जीवन है वर्तमान काल हमारे साथ है। इसीलिए उसे अनंत काल कहा गया है।

(ङ) *(iii) जीना किसे कहते हैं*

**व्याख्यात्मक हल :** अभी तक वे भूत और भविष्य में ज्यादा जीते थे। पहली बार उन्हें वर्तमान में जीने का अनुभव हुआ और असली जीना यही है, ऐसा लगा।

# वर्णनात्मक प्रश्न

[ 2-5 अंक ]

## लघु उत्तरीय प्रश्न ( 25-30 शब्द )

[ 2 अंक ]

**5. शुद्ध सोना मजबूत होता है या गिन्नी का सोना? तर्क सहित उत्तर दीजिए। [CBSE 2013]**

**उत्तर :** शुद्ध सोने की अपेक्षा गिन्नी का सोना मजबूत होता है। शुद्ध सोने में ताँबे या किसी अन्य पदार्थ की मिलावट करके उसे मजबूत और चमकदार बनाया जाता है। यही कारण है कि शुद्ध सोने के जेवर या अन्य वस्तुएँ नहीं बनाई जा सकतीं क्योंकि उसमें मजबूती नहीं होती। ताँबा, चाँदी या अन्य कोई पदार्थ मिलाकर सोने को व्यवहार में लाया जाता है।

**6. गांधीजी व्यावहारिकता का आदर्शों के साथ कैसे मिलान करते थे? [CBSE 2012, 11]**

**उत्तर :** गांधीजी को हम एक आदर्शवादी महापुरुष के रूप में याद करते हैं। किंतु लेखक के अनुसार वे एक व्यावहारिक आदर्शवादी व्यक्ति (प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट) थे। उनके ऊँचे-ऊँचे आदर्श थे, किंतु वे खोखले नहीं थे। उन आदर्शों को उन्होंने व्यवहार में लाकर दिखाया। आदर्शों और व्यावहारिकता का मिलान कैसे करना है, वह यह बखूबी

जानते थे। उन्होंने कभी भी आदर्शों को व्यवहार के स्तर पर गिरने नहीं दिया बल्कि व्यावहारिकता को आदर्श के स्तर तक ऊँचा उठाकर हमेशा व्यावहारिकता की कीमत को बढ़ाया।

**7. आदर्शों और व्यावहारिकता के मेल में किन सीमाओं और संभावनाओं का ध्यान रखना आवश्यक है? पाठ के आधार पर बताइए।**

**उत्तर :** आदर्श हमें भीतर से मजबूत बनाते हैं और व्यावहारिकता हमें चलना सिखाती है। यदि दोनों में से एक भी न हो तो सफलता हासिल नहीं हो सकती। अपने व्यवहार में आदर्शों को उतारते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि व्यावहारिकता के सामने आदर्श फीके ना पड़ जाएँ। आदर्शों की चमक हमेशा बनी रहे। व्यावहारिकता केवल आधार का काम करे। आदर्शों की जो सुंदर इमारत बनकर खड़ी हो वह मजबूती से हर ऊँच-नीच का सामना कर सके।

**8. पाठ गिन्नी का सोना हमें क्या संदेश दे रहा है?**

**9. आदर्शवादी लोगों ने समाज के लिए क्या किया है? पाठ के आधार पर लिखिए। [CBSE 2011]**

**उत्तर :** आदर्शवादी लोगों ने समाज के स्तर को हमेशा ऊँचा उठाकर रखा है। यदि हमारा समाज जीने योग्य बना हुआ है, तो उसका श्रेय केवल आदर्शवादी लोगों को ही जाता है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज के स्तर को केवल नीचे गिराने का ही प्रयास काम किया है। यदि अधिकांश लोग व्यवहारवादी हो जाएँ, तो समाज जीने योग्य ही नहीं रहेगा। समाज में शाश्वत मूल्यों जैसा अगर कुछ है, तो वह आदर्शवादी लोगों की ही देन है।

**10. 'गिन्नी का सोना' पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि अवसरवादिता और व्यावहारिकता में से जीवन में किसका महत्व है? [CBSE 2012, 11, Diksha]**

**उत्तर :** जब हम आदर्शवादिता की बात करते हैं, तो सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, प्रेम, भाईचारा आदि भाव मन में आते हैं। व्यावहारिकता की बात करने पर केवल स्वार्थ की भावना ही ध्यान में आती है। यदि समाज के सभी लोग केवल अपने ही लाभ-हानि का हिसाब लगाकर कार्य करेंगे तो समाज व देश के हित के बारे में कौन सोचेगा और यदि सब ऊँचे-ऊँचे आदर्शों की बातें ही करते रहेंगे तो उनका भी लाभ किसी को नहीं मिल पाएगा। अत: समाज के लिए आदर्शों और व्यावहारिकता का मेल महत्वपूर्ण है।

**11. ताँबा कब महत्वपूर्ण हो जाता है? [Diksha]**

**12. लेखक 'रवींद्र केलेकर' ने असली सफलता किसे माना है? पाठ के आधार पर बताइए।**

**उत्तर :** लेखक 'रवींद्र केलेकर' के अनुसार कुछ लोग व्यावहारिक होते हैं, केवल अपने लाभ और हानि का हिसाब लगाकर ही कदम बढ़ाते हैं। वे आगे बढ़ते हुए, सफल होते हुए नजर आते हैं। किंतु ऐसी सफलता असली सफलता नहीं है। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी लेकर चलें, यही महत्व की बात है। अन्य लोगों को पीछे धकेलकर आगे बढ़ना सफलता नहीं कहलाती। ऐसी सफलता न तो स्थायी होती है और न ही स्वस्थ वातावरण प्रदान करती है।

**13. "सभी क्रियाएँ इतनी गरिमा पूर्ण ढंग से कीं कि उनकी हर भंगिमा से लगता था मानो जय जयवंती के स्वर गूँज रहे हों।" आशय स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2013]**

**उत्तर :** लेखक जापान में अपने मित्र के साथ एक टी-सेरेमनी में गए थे। वहाँ जो व्यक्ति चाय बनाकर परोसता है, उसे चाजीन कहा जाता है। उस टी-सेरेमनी का आयोजन एक पूर्ण प्राकृतिक वातावरण में किया गया था। चाज़ीन ने अँगीठी सुलगाने, बर्तन लाने, चाय बनाने से लेकर परोसने तक की सभी क्रियाएँ बड़े सलीके से, गरिमापूर्ण ढंग से कीं। उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जय जयंती के स्वर गूंज रहे हों अर्थात् उस शांत वातावरण में एक मधुर संगीत-सा सुनाई दे रहा था।

**14. 'हमें सत्य में जीना चाहिए। सत्य केवल वर्तमान है।'—'पतझड़ में टूटी पत्तियाँ' के इस कथन को स्पष्ट करते हुए लिखिए कि लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?**

**उत्तर :** जापान की ध्यान की एक विशेष पद्धति के अंतर्गत लेखक जब विचार शून्य हो गए तब इन्हें ऐसा लगा की वे वर्तमान में जी रहे हैं और वह अनंत जितना विस्तृत है क्योंकि एक वही है जो हमेशा हमारे साथ है। हम सामान्यत: भूत और भविष्य में ही जीते हैं जबकि ये दोनों ही काल मिथ्या हैं, एक बीत चुका है और दूसरा अभी आया ही नहीं तो इन पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। हमारा अधिकार केवल वर्तमान पर है जो हमारे सामने है। यदि हम उसे बेहतरीन बना लें तो हमारा भूत और भविष्य अपने आप ही सुधर जाएँगे।

**⚠ एहतियात**

*➥ वर्तमान में जीने के संदेश को इस अर्थ में नहीं लेना चाहिए कि हम भविष्य की योजना ही न बनाएँ। योजना अवश्य बनाएँ किंतु उसे कार्यान्वित वर्तमान में रहकर ही किया जा सकता है।*

**15. जापानी लोगों में कौन-कौन सी बीमारियाँ बढ़ रही हैं? इनके पीछे क्या कारण हैं? [CBSE 2012, 11]**

**उत्तर :** जापान के लोगों के जीवन की बढ़ी हुई रफ्तार, उनका अकेलापन, कम समय में अधिक से अधिक कार्य करने का प्रयास उन्हें तनावग्रस्त कर देता है। यही तनाव जब जरूरत से ज्यादा बढ़ जाता है, तब मानसिक रोगों का रूप

ले लेता है। जापान भूगोल और जनसंख्या की दृष्टि से एक छोटा-सा देश है, किंतु बड़े-बड़े देशों से भी आगे निकल चुका है। यह असंभव कार्य संभव करने के लिए जापानियों को अपने जीवन की रफ्तार हजार गुना बढ़ानी पड़ी। यही कारण है कि वहाँ मानसिक बीमारियाँ इतनी बढ़ गईं कि वहाँ के अस्सी फ़ीसदी लोग मनोरुग्ण हैं।

**16. लेखक ने अनंत काल जितना विस्तृत किसे और क्यों कहा है? [Diksha]**

**उत्तर :** जापान में ध्यान की एक प्रक्रिया का हिस्सा बनते हुए लेखक ने पहली बार महसूस किया कि वह वर्तमान में जी रहे हैं और वही एकमात्र सत्य है। लेखक को लगा कि हम अपना अधिकांश समय जिस अतीत और भविष्य में बिताते हैं, वे दोनों ही काल मिथ्या हैं। वर्तमान ही एकमात्र ऐसा काल है जो सत्य है, हमेशा हमारे साथ है। जहाँ-जहाँ, जब-जब हम हैं, तब-तब हम वर्तमान में ही हैं। इसी आधार पर लेखक ने वर्तमान काल को अनंत काल कहा है। जब तक हमारा अंत नहीं होता, तब तक हमारे वर्तमान का भी अंत नहीं होता।

**⚠ एहतियात**

*– छात्रों को विरोधाभास नजर आने लगता है कि वर्तमान तो पल भर में बीत जाता है, तो वह अनंत काल कैसे हो सकता है।*

*इसका अर्थ यह है कि जहाँ-जहाँ, जब-जब हम हैं, वर्तमान ही हमारे साथ है। इसीलिए वह अनंत है।*

**17. 'कोई बोलता नहीं बकता है'। इन पंक्तियों में 'कोई' किसके लिए आया है? वह बकता क्यों है? 'झेन की देन' के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2013]**

**उत्तर :** जापान के निवासियों के जीवन की तीव्र रफ्तार को बताने के लिए लेखक ने कहा है कि वह बोलते नहीं बकते हैं। इसका अर्थ यह है कि जब कोई समय की गति के साथ चलता है, प्रत्येक कार्य सहज और सामान्य गति से करता है, तो उसके चलने-बोलने, उठने-बैठने में ठहराव होता है। किंतु जब हमारी रफ्तार समय से कहीं अधिक हो जाती है तो हमारी हर क्रिया असामान्य या असभ्य लगने लगती है। जब ठहराव के साथ, सलीके से बात की जाए, तो वह बोलना कहलाता है। जापान के लोग बहुत तेज़ या जल्दी बोलते हैं, यहाँ तक कि अकेले में भी बड़बड़ाते रहते हैं। इसलिए लेखक ने कहा कि वह बोलते नहीं बकते हैं ।

**18. कौन सी क्रियाएँ चाजीन के द्वारा गरिमापूर्ण ढंग से की गईं? [CBSE 2011]**

**19. टी-सेरेमनी में केवल तीन आदमियों को प्रवेश दिए जाने का क्या कारण था? [CBSE 2012, 11]**

**उत्तर :** जापान में बौद्ध दर्शन की मान्यता है। उसी के अनुसार वहाँ ध्यान की एक प्रक्रिया प्रचलित है। यह देखने में चाय पिलाने की एक विधि मालूम होती है। इसके अंतर्गत शांति मुख्य बात होती है। पूर्ण प्राकृतिक और शांत वातावरण में इस ध्यान की प्रक्रिया का आयोजन किया जाता है। यहाँ एक समय में केवल तीन आदमियों को ही प्रवेश दिया जाता है ताकि शांति को कायम रखा जा सके और ध्यान की प्रक्रिया सफल हो सके।

**20. टी-सेरेमनी से क्या-क्या लाभ हैं? [CBSE 2014]**

**उत्तर :** जापान में प्रचलित टी-सेरेमनी वास्तव में ध्यान की एक प्रक्रिया है। उसका प्रमुख उद्देश्य लोगों को भाग-दौड़ भरे जीवन से कुछ देर शांत और एकांत वातावरण में ले जाना है। असीम शांति के अंतर्गत धीरे-धीरे व्यक्ति वर्तमान को महसूस करने लगता है। कुछ समय के लिए वह भूत और भविष्य को भूल जाता है। दिमाग की उथल-पुथल, विचारों का आवागमन रुक जाता है और दिमाग को शांति और सुकून मिलता है। इस प्रकार यह आयोजन तनावग्रस्त जीवन में से कुछ चैन भरे पल जीने का उपहार देता है।

**21. क्या आप 'झेन की देन' पाठ के इस विचार से सहमत हैं कि विज्ञान और तकनीकी में हुए आविष्कारों के कारण विकासशील देशों में जीवन की रफ्तार बढ़ गई है? तर्क सहित उत्तर दीजिए। [CBSE 2013]**

**उत्तर :** आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। विभिन्न अविष्कारों का एकमात्र उद्देश्य मानव जीवन को सुविधाएं प्रदान करके सरल बनाना था। किंतु जैसे-जैसे हम तकनीकी के क्षेत्र में आगे बढ़ते जा रहे हैं, वैसे-वैसे हमारा जीवन जटिल होता चला जा रहा है। मशीनों की तरह से भाव शून्य होता जा रहा है। संबंध बिखरते जा रहे हैं। हम एक-दूसरे से दूर होकर केवल वैज्ञानिक उपकरणों के साथ समय व्यतीत करते हैं। वैज्ञानिक उपकरणों में उलझकर हमें तेज़ दौड़ते रहने की इतनी आदत हो गई है कि अब धीरे चलना भूल गए हैं। आविष्कारों का उद्देश्य समय की बचत करना था पर अब उन आविष्कारों का लाभ लेने के लिए भी समय नहीं है।

## निबन्धात्मक प्रश्न (60-70 / 80-100 शब्द) [4 एवं 5 अंक]

**22. 'शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना', गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है? [CBSE 2012, 11, NCERT]**

**उत्तर :** हम गांधीजी को एक महान आदर्शवादी व्यक्ति के रूप में याद करते हैं किंतु वास्तव में वे व्यावहारिक आदर्शवादी यानी प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट थे। उच्च आदर्श रखते थे किंतु व्यावहारिकता की कीमत को भी समझते थे। गांधीजी ने अपने आदर्शों को व्यवहार में लाने के लिए

कभी भी आदर्शों के स्तर को नीचे नहीं गिरने दिया अपितु व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर तक पहुँचा दिया अर्थात् उन्होंने सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर ताँबे की कीमत को बढ़ाया। यही कारण है कि उनके व्यवहार में हमेशा सोने की चमक बनी रही ताँबा उस पर हावी नहीं हो सका।

**23. लेखक ने व्यवहारवादी लोगों के बारे में क्या कहा है? वह असली जीवन में आदर्शवादी लोगों से कैसे भिन्न होते हैं? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

**[CBSE 2012, 11]**

**उत्तर :** लेखक 'रवींद्र केलेकर' के अनुसार समाज में तीन तरह के लोग हैं। एक आदर्शवादी जिनके उच्च आदर्श होते हैं। दूसरे व्यावहारिक, जो केवल अपने बारे में सोचते हैं, अपने लाभ और हानि का हिसाब लगाकर भी कदम उठाते हैं। तीसरे होते हैं प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट (व्यावहारिक आदर्शवादी) व्यक्ति जो आदर्शों की कीमत समझते हैं और उन्हें व्यवहार में लाना भी जानते हैं। जो अपना जीवन दूसरों के लिए जीते हैं। वे केवल अपनी सुख-सुविधा के लिए साधन जुटाने की अंधी दौड़ में शामिल नहीं होते और न ही खोखले आदर्शों का डंका बजाते हैं। आदर्श तथा व्यवहार के मेल से जीवन महत्वपूर्ण बनाते हैं। लेकिन व्यवहारवादी लोग इनसे भिन्न, अवसरवादी होते हैं। लेखक ने व्यवहारवादी लोगों की सराहना नहीं की है। उनका कहना है कि व्यवहारवादी लोगों के कारण समाज का स्तर हमेशा नीचे ही गिरा है। ऐसे लोग कभी समाज और देश के बारे में नहीं सोचते। वे वही काम करते हैं, वही कदम उठाते हैं, जो उनके खुद के हित में होता है। वे हमेशा सजग रहते हैं इस बात के प्रति कि उनका हित किसमें है। अन्यों से आगे निकलने के लिए, हमेशा ऊपर बढ़ते रहने के लिए किसी को भी नीचे गिराने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे लोगों ने समाज के स्तर को हमेशा गिराया ही है।

**24. आपके विचार में कौन से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं? वर्तमान में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।**

**[CBSE 2016, 12, 11, NCERT]**

**उत्तर :** शाश्वत का अर्थ है जो हमेशा रहे। कुछ ऐसे जीवन मूल्य होते हैं जिनका महत्व हर काल और हर परिस्थिति में एक समान रहता है। सच्चाई, ईमानदारी, मानवता, देश-प्रेम, भाईचारा, अहिंसा आदि को शाश्वत मूल्य कहा जा सकता है। भले ही वर्तमान समय में हमें इन मूल्यों को अपनाने में व्यवहार में लाने में कठिनाई महसूस हो रही हो और ऐसा लग रहा हो कि इन पर चलकर सफल नहीं हुआ जा सकता बल्कि जो लोग इनके विपरीत आचरण करते हैं वे तेज़ी से आगे बढ़ते हुए नजर आते हैं। किंतु वह आगे बढ़ना या सफल होना स्थायी नहीं होता। वास्तविक सफलता इन्हीं मूल्यों पर चलने से मिलती है, उसी में असली आनंद और स्थायित्व होता है।

**25. लेखक 'रवींद्र केलेकर' ने शुद्ध आदर्शों को शुद्ध सोने के समान बताया है। आप उनके विचारों से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर :** लेखक 'रवींद्र केलेकर' का मानना है कि शुद्ध आदर्श शुद्ध सोने के जैसे होते हैं। जिस प्रकार शुद्ध सोना कीमती होता है किंतु व्यवहार में लाने योग्य नहीं होता व्यवहार में लाने के लिए उसमें कुछ मात्रा में ताँबा मिलाकर उसे मजबूत और चमकदार बनाया जाता है, उसी प्रकार शुद्ध आदर्श कहने, सुनने और पढ़ने में बहुत अच्छे लगते हैं किंतु यदि वे व्यवहार में ही ना लाए जा सकें तो खोखले साबित हो सकते हैं। इसलिए उनमें व्यावहारिकता का पुट देकर उन पर चला जाता है और तब उनकी कीमत सिद्ध हो पाती है। इसलिए लेखक ने शुद्ध आदर्श को शुद्ध सोना तथा व्यावहारिकता को ताँबा कहकर उसका विश्लेषण किया है। मेरे विचार से यह तुलना उचित है। शुद्ध आदर्शों को समझाने के लिए शुद्ध सोने का जो उदाहरण दिया गया है, उससे प्रत्येक व्यक्ति आदर्शों की सीमाएँ और संभावनाए समझकर यथा योग्य उन्हें जीवन में उतार सकता है।

**26. प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट से क्या अभिप्राय है? गांधीजी प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट थे। कैसे?**

**[CBSE 2019]**

**उत्तर :** समाज में हमें अनेक प्रकार की विचारधारा रखने वाले लोग नजर आते हैं। एक वर्ग उन आदर्शवादी लोगों का होता है जो बहुत ऊँचे-ऊँचे आदर्शों में विश्वास रखते हैं। सच्चाई, ईमानदारी, एकता, देश-प्रेम, मानवता के सपने देखते हैं। दूसरा वर्ग उन लोगों का है जो व्यावहारिक होते हैं। अपने लाभ-हानि के प्रति सचेत रहते हैं। उस ओर कदम बढ़ा देते हैं जिस ओर उन्हें फायदा नजर आता है। एक तीसरा वर्ग ऐसे लोगों का है जो आदर्शों में केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उन्हें व्यवहार में लाकर दिखाते हैं। इस दृष्टि से गांधीजी को लेखक ने प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट (व्यावहारिक आदर्शवादी) कहा है। उन्होंने जीवन में सफ़लता अर्जित करने के लिए कभी भी अपने आदर्शों व सिद्धांतों से मुँह नहीं मोड़ा। उन्होंने अपने व भारतवासियों के लिए एक लक्ष्य निर्धारित किया और वह लक्ष्य था—अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजाद कराना। उनका यह लक्ष्य या प्रयास तत्कालीन समय की माँग के अनुसार उचित था और उस व्यावहारिक सोच का सूचक भी था, जिसके अनुसार पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त हुए बिना भारत प्रगति नहीं कर सकता था। इसी लक्ष्य की

प्राप्ति के लिए उन्होंने अहिंसा के आदर्श मार्ग पर चलने का निर्णय लिया। इस प्रकार उन्होंने अपनी व्यावहारिक सोच को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाया। अंतत: उन्हें अपनी सशक्त नेतृत्व क्षमता के बल पर भारतवर्ष को बिना किसी रक्तपूर्ण क्रांति के आजाद कराने में सफलता भी प्राप्त की।

**⚠ एहतियात**

*➥ छात्र ऐसा समझ लेते हैं कि प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट होने का मतलब है थोड़ी बेईमानी, थोड़ा झूठ, थोड़ी हिंसा को अपना लेना। किंतु ऐसा नहीं है। प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट होने का मतलब है अपने आदर्शों को व्यवहार में लाने का गुण।*

**27. गांधीजी में नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता थी उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए**

**[CBSE 2014, NCERT]**

**उत्तर :** सत्य, अहिंसा, प्रेम, ईमानदारी गांधीजी के विलक्षण आदर्श थे। यदि वे अपने आदर्शों की केवल बातें करते रहते तो देश उनके साथ नहीं चल सकता था। इन आदर्शों को व्यवहार में लाना आवश्यक था और गांधीजी व्यावहारिकता की कीमत समझते थे। उन्होंने अपने आदर्शों की खोखली बातें नहीं कीं बल्कि उन्हें व्यवहार में लाकर दिखाया। भारत देश ने कई वर्षों तक अंग्रेजों की गुलामी को सहा और उनसे मुक्त होना लगभग असंभव-सा लगता था। गांधीजी ने शांति और अहिंसा के बल पर कई आंदोलन चलाए। परिणामस्वरूप देश को आजाद कराने जैसे अपने महान लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हो सके। प्रेम, भाईचारे और अहिंसा के बल पर इतना बड़ा कार्य करना और पूरे देश को साथ लेकर चलना यही सिद्ध करता है कि गांधीजी में नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता थी।

**28. 'हमें वर्तमान में जीना चाहिए, सत्य केवल वर्तमान में है'। पतझड़ में टूटी पत्तियाँ के इस कथन को स्पष्ट करते हुए लिखिए कि लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?**

**[CBSE 2015]**

**उत्तर :** हमारा अधिकांश समय भविष्य के रंगीन सपने देखने में या अतीत की यादों में ही व्यतीत होता है। न तो हम अतीत में जाकर उसे बदल सकते हैं और न ही भविष्य को निर्धारित कर सकते हैं। हमारे हाथ में अगर कुछ है, तो वह केवल वर्तमान क्षण है। अफसोस इस बात का है कि हम उस वर्तमान क्षण को अतीत और भविष्य में उलझकर व्यर्थ गंवाते रहते हैं। वही वर्तमान जब अतीत बन जाता है, तो फिर उस पर पछताते हैं। लेखक रवींद्र केलेकर ने जब कुछ पल वर्तमान में बिताए, तब उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि वास्तव में यही तो एकमात्र सत्य है। हमारे हाथ में जो पल है यदि हम उसका सर्वोत्तम प्रयोग करेंगे, तो हमारा भविष्य अपने आप ही संवर जाएगा। अत: वर्तमान पल की कीमत समझते हुए उसी में जीना सीखना जरूरी है। यदि हम ऐसा कर पाए, तो बहुत ही हल्का, शांति और सुकून से भरा जीवन जी पाएँगे।

**⚠ एहतियात**

*➥ छात्र इस बात को समझ नहीं पाते कि हम कब वर्तमान में नहीं होते। शारीरिक रूप से हम वर्तमान में ही होते हैं किंतु मानसिक रूप से भविष्य या अतीत में विचरण करते रहते हैं।*

**29. 'झेन की देन' पाठ में जापानी लोगों को मानसिक रोग होने के क्या-क्या कारण बताए गए हैं? आप इनसे कहाँ तक सहमत हैं? [CBSE 2016]**

**उत्तर :** लेखक ने जापान में बातचीत के दौरान अपने मित्र से पूछा कि यहाँ किस तरह के रोग अधिक होते हैं। पता चला कि वहाँ के अस्सी फ़ीसदी लोग मनोरुग्ण हैं। जापान में जीवन की रफ्तार बहुत बढ़ी हुई है। वहाँ लोग चलते हुए नहीं दौड़ते हुए नजर आते हैं। वे बोलते नहीं, बकते हैं। स्थिति ऐसी है कि जब वह अकेले होते हैं तो अपने आप से ही बातें करते रहते हैं। वे एक महीने का काम एक दिन में करने की कोशिश करते हैं। इसके लिए उन्हें अपने शरीर और दिमाग को सामान्य से कहीं अधिक तेज़ रफ्तार से चलाना पड़ता है। दिमाग की रफ्तार वैसे भी तेज़ होती है। जब उसे स्पीड का इंजन लगा दिया जाए तो वह हजार गुना अधिक रफ्तार दौड़ता है और एक स्थिति ऐसी आती है जब वह तनावग्रस्त होकर बीमार हो जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि तनाव की स्थिति में अधिक समय रहने से व्यक्ति मानसिक रूप से रोगी हो जाता है। इसका एकमात्र उपाय यही है कि हम अपने जीवन को सरल और सहज बनाने की कोशिश करें।

**30. हमारे जीवन की रफ्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। झेन की देन पाठ के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए।**

**[CBSE 2012, 11]**

**31. टी-सेरेमनी की तैयारी और उसके प्रभाव पर चर्चा कीजिए। [CBSE 2016]**

**उत्तर :** आज के मशीनी युग में, लगभग हर देश में लोगों के जीवन की रफ्तार बढ़ी हुई है। बहुत से लोग तनावग्रस्त जीवन जी रहे हैं। इस तनाव से मुक्ति पाने के लिए लोग ध्यान की प्रक्रियाओं का सहारा लेते हैं। ध्यान की कोई एक विधि नहीं अपितु अनेक विधियाँ प्रचलित हैं। उन्हीं में से एक विधि जो जापान में प्रचलित है उसका वर्णन पाठ 'झेन की

देन' में किया गया है। यह एक प्रकार की टी-सेरेमनी होती है, जिसका आयोजन किसी शांत और प्राकृतिक वातावरण में किया जाता है। एक समय में केवल तीन ही लोगों को प्रवेश मिलता है। चाज़ीन गरिमा पूर्ण ढंग से अपनी सभी क्रियाएँ करते हुए प्यालों में दो-दो घूँट चाय परोसता है। उपस्थित लोग लंबे समय तक एक-एक घूँट भरकर चाय की चुस्कियाँ लेते हुए, शांति में समय व्यतीत करते हैं। लेखक को इसी विधि के दौरान वर्तमान में जीने का अनुभव हुआ था। लेखक को ध्यान की यह प्रक्रिया बेहद खूबसूरत लगी जिसने उन्हें भूत और भविष्य से मुक्त होकर वर्तमान में जीना सिखा दिया।

**32. टी-सेरेमनी किसे कहा जाता है? इसमें होने वाले अनुभवों पर टिप्पणी कीजिए। [CBSE 2016]**

**उत्तर :** जापान में बौद्ध धर्म प्रचलित है। बौद्ध दर्शन के अंतर्गत एक विशेष प्रक्रिया के दौरान ध्यान लगवाया जाता है, जिसका उद्देश्य लोगों को तनावमुक्त करना होता है। ध्यान की इस अनोखी प्रक्रिया को टी-सेरेमनी का रूप और नाम दिया गया है। इसमें एक समय में तीन से अधिक लोग शामिल नहीं हो सकते। पूर्ण शांत और प्राकृतिक वातावरण में, बिना कोई उपदेश या प्रवचन सुने ही लोग धीरे-धीरे महसूस करने लगते हैं कि उनके विचारों के आवागमन में ठहराव आ गया है। लेखक जब इस प्रकिया में शामिल हुए, तब कुछ देर तो उलझन में पड़े। फिर उन्हें महसूस हुआ कि दिमाग की रफ्तार धीमी पड़ते-पड़ते बिल्कुल बंद हो गई है। विचारों का आवागमन रुक गया है। पहली बार उन्होंने महसूस किया कि वे वर्तमान में जी रहे हैं। अतीत बीत गया है, भविष्य अभी आया ही नहीं। एक वर्तमान ही है जो सर्वदा, सर्वत्र हमारे साथ होता है। टी-सेरेमनी के अपने अनोखे अनुभव के आधार पर ही लेखक ने भूत और भविष्य को मिथ्या और वर्तमान को ही एकमात्र सत्य बताते हुए उसी में जीने का संदेश दिया है।